महेश दर्पण

ई-मेल-darpan.mahesh@gmail.com

हादसा

जैसे-जैसे समय खिसक रहा था अँधेरा गहराता जा रहा था। सड़क पर लगे विजली के खंभों से आने वाली रोशनी, दिये की टिमटिमाती लौ-सी चमक दे रही थी। दिल्ली की बसों का भला क्या ठिकाना ! आये तो अभी आ जाये, न आये तो कभी न आये... घड़ी देखने पर जग्गो बाबू को लगा कि देर काफी हो चुकी है। अब अगर पाँच-दस मिनट तक और बस न मिली तो समझिए आज की रात घर पहुँचना नामुमकिन ही है।

"... देखें शायद कोई लिफ्ट ही दे दे ?" सोचकर जग्गो बाबू अपनी ओर जाने वाले स्कूटरों को, हाथ से रुकने का संकेत करने लगे। यूँ तो दो-तीन कारें भी गुज़रों, पर जग्गो बाबू जानते थे कि कारवाले भला उन्हें क्यों बिठाने लगे ! वे उनके संग बैठने की औकात रखते होते तो इस वक्त क्यों बस-स्टाफ पर इत्ती देर से खड़े-खड़े परेशान हैरान हो रहे होते ।

"घड़ी की सुई के साथ-साथ जग्गो बाबू के दिल की धड़कन भी गति पकड़ने लगी थी... महीने-भर की तनख्वाह जेब में हो और रात को बारह बजे आप बस के इंतजार में खड़े हों... तो इसके सिवाय और हो भी क्या सकता है। कई स्कूटरवाले आये और बगैर रोके आगे बढ़ लिये। जग्गो बाबू को लगा कि बडे और छोटे शहर के फर्क को लेकर लोग यों ही नहीं झींकते फिरते। इस वक्त अगर वे अपने मेरठ में होते तो इत्ती देर खड़े रह सकते थे भला ! दसियों साइकिलवाले रुककर खुद ही पूर्व लेते-"क्या मास्टरजी, घर चलनौ हो तो म्हारी गैल बैठ लेओ!" ख़यालों की दुनिया ने जग्गो बाबू को सचमुच मेरठ पहुँचा दिया था। वे भूल ही गये कि इस वक्त वे दिल्ली के एक बस स्टॉप पर खड़े हैं, जहाँ सिवाय उनके और कोई नहीं है।

अचानक करीब आते स्कूटर की आवाज़ से जग्गो बाबू चौंक पड़े। एक बार फिर साहस करते हुए उन्होंने हाथ बढ़ाकर रुकने का संकेत दिया। वह पास आकर रुका तो जग्गो बाबू के होश ही उड़ गये। पुलिस-इंस्पेक्टर की वर्दी में स्कूटर सवार पूछ रहा था, "क्या बात है, कहाँ जाना है...?"

"कहीं नहीं, बस थोड़ी ही देर में बस आने वाली है, उसी का इंतज़ार है... माफ कीजिएगा, आपको गलती से रोक बैठा।"

स्कूटरवाला चेहरे पर अजीब से भाव लेकर चलता बना और जग्गो बाबू सोचने लगे... अच्छा हुआ, समय पर अकल आ गयी... वरना कौन जाने, मरा बिठाकर ले ही जाता और रास्ते में पूरी तनख्वाह छीन-छानकर कहीं भी पटक जाता... पुलिस वालों का कोई भरोसा थोड़े ही रहा है!"

अँधेरा बढ़ता ही जा रहा था... पर जग्गो बाबू अब इत्मीनान से 'नाइट बस- सर्विस' का इंतज़ार करते हुए सोच रहे थे कि अभी-अभी वे कितने बड़े हादसे से बच निकले हैं।